fenzz scans
मनोज
कॉमिक्स
संख्या 601
मूल्य 6.00
इन्स्पेक्टर
मनोज
और
दौलत का
अंधा
KADAM BROTHERS.
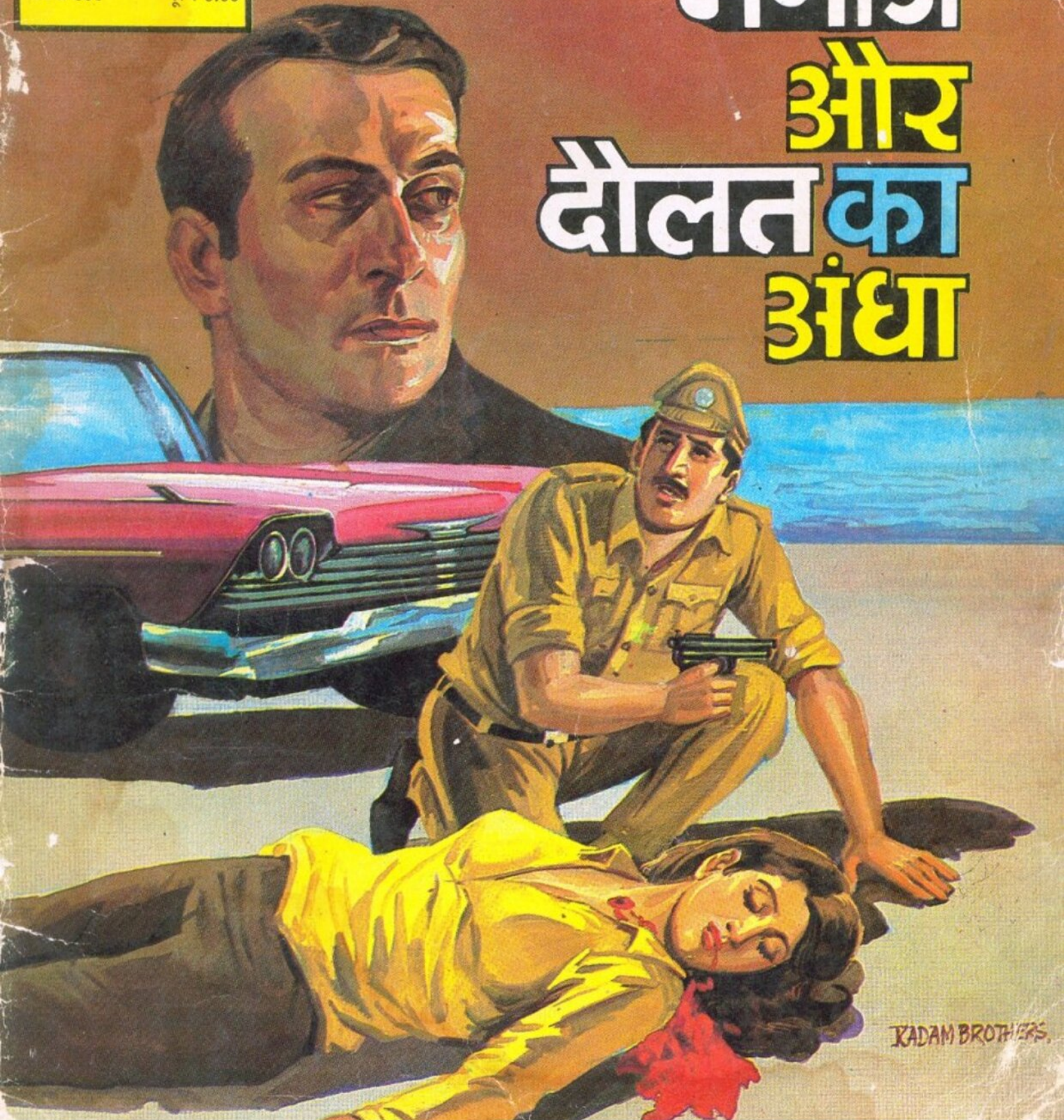
This comic/ebook is brought to you by and is the exclusive property of Raj Comics Fan Nation (RFN)
http://www.orkut.com/Main#Community.aspx?cmm=63751321

We rekindle old memories and do it in style. This is RFN, boasting a library of 3,296 digital comics (and counting), our passion ranges from Nagraj, Dhruv, Doga to Ram Rahim, Crookbond n Hawaldar Bahadur. From Chacha Chaudhary, Pinki, Biloo to Tinkle and Amar Chitra Katha, you'll find them at RFN. Raj, Tulsi, Diamond, Manoj, DC, Marvel, King,…..one name..RFN.

Not just comics, but special weekly fests, games, artworks, cash and comic prizes; now branded the **Official Raj comics Community 2009**, it is host to every artist of Raj comics.

Rocking the Nation, Bringing the Junoon Back! Relive the Passion, Share the glory.

Raj Comics Fan Nation.

RAJ COMICS FAN NATION
BRINGING THE JANOON BACK

मनोज कॉमिक्स

के आगामी नये सैट की पुस्तकें

डबल सीक्रेट एजेन्ट $00^1/_2$

राम-रहीम

तबाही का सूरज
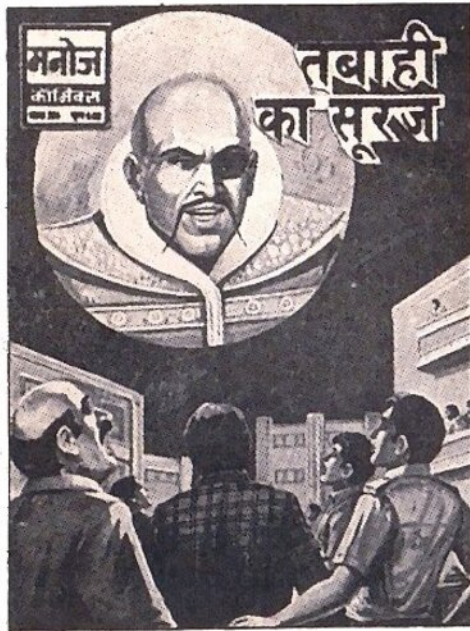
- यमराज का वरदान और शैतान दैत्य
- दानी राजा और खजाने के चोर
- नागमणि के चोर
- बोलने वाला शंख
- सर्पराज की सनक
- भूत का ढोल
- महादेव का शाप
- दयावान रानी और गुलाम राजा
- हवलदार बहादुर और भगोड़ा कैदी
- दुश्मन नं० 2
- तीन चोर
- मकड़ी रानी और काली रात का कातिल
- इंस्पेक्टर मनोज और काशीपुर की प्रेतात्मा
- किंग डायमण्ड
- पाप का रास्ता
- लाखामल का प्रेत

इसी सैट की पुस्तकें

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
का एक हैरत अंगेज़ कॉमिक्स

वतन के दुश्मन
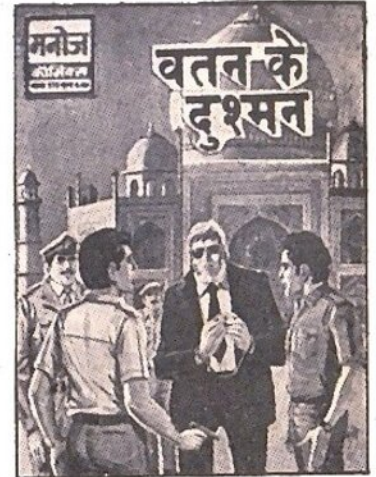
- इन्द्रलोक के चोर
- मुर्गा जादूगर और नौलखा हार
- कुल का कलंक
- लाखों की बात
- बदकिस्मत परी
- जादुई पंखे का राजकुमार
- नरभक्षी राजा
- बेरहम राजा और गुलाब
- कुत्ते के शिकारी
- खूनी अंगूठी
- इंस्पेक्टर मनोज और दौलत का अंधा
- जासूस मकड़ी
- जासूस मकड़ी का अंत
- जासूस मकड़ी का रहस्य
- हवलदार बहादुर और उस्ताद पैड्रो
- मौत का कैदी

प्रकाशक: मनोज पॉकेट बुक्स, 1584, दरीबा कलाँ, दिल्ली-110006 वितरक: राजा सेल्स कॉरपोरेशन, 25/128, अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर, दिल्ली-110007

RAJ COMICS FAN NATION
if u like comics buy comics and save comics industry, jay hind
fenzz scans
www.fenzz.co.nr

इंस्पेक्टर मनोज और दौलत का अंधा

चित्रांकन : चित्रक
लेखक : अमीत चटर्जी

फिर जैसे ही हवलदार निकट पहुंचा मनोज हैरान स्वर में बोला —
तुम यहां। इतनी सुबह, खैरियत तो है ना?
अब खैरियत ही खैरियत है सर! अगर आप मुझे छोड़कर चले जाते तो लोग मेरा जीना दूभर कर देते।
यानी तुम मेरा पीछा नहीं छोड़ोगे।
सर! परछाईं भी कभी शरीर से दूर हुई है। पूरा डिपार्टमेंट जानता है कि मैं आपकी परछाईं हूं।
परछाईं के बच्चे! तेरी नौकरी का क्या होगा?
मैंने कल ही छुट्टी सेंक्शन करा ली थीं सर।
हो गया सत्यानाश! लगता है इस बार भी छुट्टियां आराम से नहीं गुजरेंगी।
तभी—
चलिए सर! अब आप किसका इन्तजार कर रहे हैं। मैं बैठ चुका हूं।
मुझे मालूम है। उफ!
गहरी सांस छोड़ते हुए इंस्पेक्टर मनोज ने मोटरसाइकिल दौड़ा दी।

रामगढ़ पहुंचकर इंस्पेक्टर मनोज ने वहां के सबसे बढ़िया होटल ब्लू हैवन में डबल बेड का आरामदेह महंगा कमरा लिया तो हवलदार चुप न रह सका।
सर! इतना महंगा कमरा लेने की क्या जरूरत है। आप इस इलाके के दरोगा को अपने पहुंचने की खबर कर दें, वह फ्री में सारा इन्तजाम कर देगा।
खामोश!

फिर इंस्पेक्टर मनोज हवलदार को खींचते हुए काउन्टर से दूर ले गया और डपटते हुए बोला —
अपनी जुबान बन्द रखो बेवकूफ! यहां किसी को हमारी असलियत का पता नहीं चलना चाहिए। वरना मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़कर रख दूंगा। समझे!
यस सर!

हाथ नीचे। हाथ नीचे मूर्ख!

हवलदार घबराकर हाथ नीचे करते हुए बोला —
अब क्या हुआ सर?
तुम्हारा सिर...

...अब चलो यहां से।
यस सर!
लेकिन मनोज की हिदायत का ख्याल आते ही हवलदार ने सलाम के लिए उठते हुए हाथ को नीचे धकेला और उसके पीछे चल दिया।

अपने कमरे में पहुंचकर दोनों पहले स्नान आदि से निवृत्त हुए, फिर हैवी ब्रेकफास्ट निपटाकर सैर के लिए निकल पड़े।
वाह सर! क्या जगह है।
अभी तुमने देखा ही क्या है वीर बहादुर। कुछ दिन यहां रह लोगे तो फिर वापस जाने को तुम्हारा मन ही नहीं करेगा।
फिर दोनों घूमते-घामते काफी दूर निकल गये। जब वे वापस लौटे तो रात हो चुकी थी। अतः दोनों ने भोजन किया और अपने कमरे में पहुंच अपने-अपने बिस्तरों पर लेट गये।
इसी तरह सैर-सपाटे, मौज-मस्ती करते तीन दिन गुजर गये। हवलदार वीर बहादुर की तो जैसे पौ बारह हो गई थी। वह अपने आपको किसी फिल्मी हीरो से कम नहीं समझ रहा था। आज उसने वही शर्ट-पेंट पहनी थी, जो पिछले दिन इंस्पेक्टर मनोज ने उसके लिए बाजार से खरीदी थी। जब वह तैयार होकर मनोज के सामने आया तो मनोज बरबस ही बोल उठा।
वाह! आज तो तुम जंच रहे हो प्यारे। रामगढ़ में आई तितलियों की नींद मत चुरा लेना।
आप भी कैसी बातें करते हैं सर...
fenzz
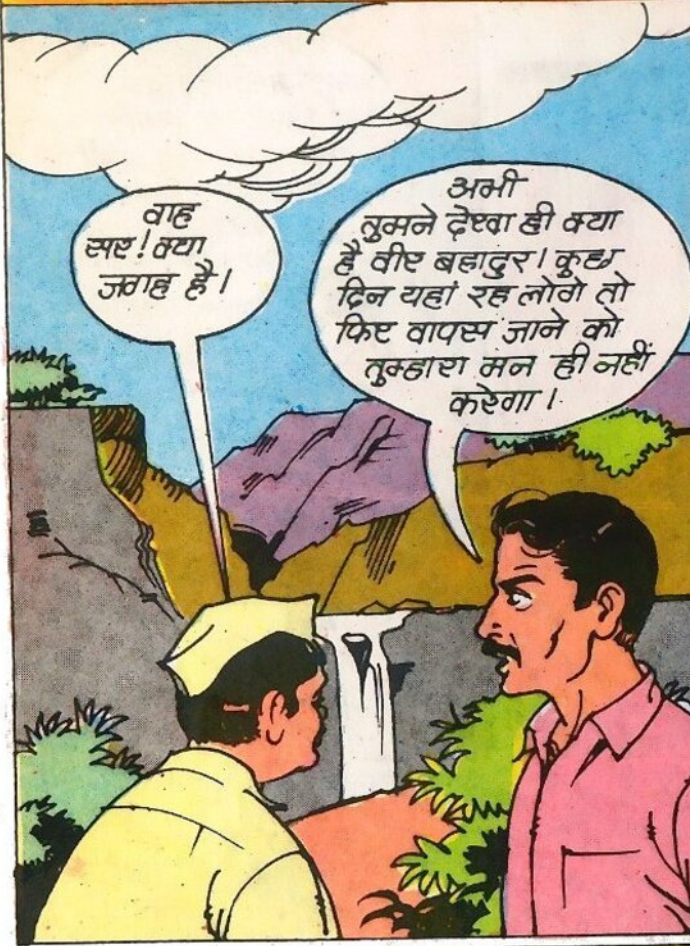
...मैं भला क्या जानूं नींद चुराना किसे कहते हैं?
हा-हा-हा!
इंस्पेक्टर मनोज हवलदार की अदा पर बेइख्तियार हंस पड़ा।

तभी किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी और इंस्पेक्टर मनोज की हंसी थम गई।
देखो कौन है।
ठक्...ठक् ठक्
जी सर!

दूसरे ही पल हवलदार आगे बढ़ गया, लेकिन दरवाजा खोलते ही हवलदार हक्का-बक्का-सा खड़ा रह गया। उसको इस दशा में खड़ा देख इंस्पेक्टर मनोज चौंककर बोला—
कौन है वीर बहादुर?
501
त... तितली...!

उधर सामने खड़ी युवती हवलदार के जवाब पर मुस्कराते हुए बोली—
मेरा नाम मंजू है। क्या मैं इंस्पेक्टर मनोज से मिल सकती हूं?
आयं! इसे कैसे पता चला कि साहब यहां हैं?

हवलदार साहब को सोच में डूबा देख मंजू बोली—
हवलदार साहब, मेरे पास वक्त बहुत कम है। मेरा इंस्पेक्टर मनोज से मिलना बहुत जरूरी है।
ओह! आइये।

तब हवलदार मंजू को अन्दर ले आया।
साहब! यह देवीजी आपसे मिलने आई हैं।
जब आप आ ही गई हैं मिस मंजू, तो खड़ी क्यों हैं...

...बैठिये।
थैंक्यू!

युवती के बैठने के बाद इंस्पेक्टर मनोज गम्भीर स्वर में बोला—
लगता है आप काफी लम्बा सफर तय करके मुझसे मिलने आई हैं।
जी हां! लेकिन आपको कैसे पता चला?

आपके बिखरे, उलझे और धूल में लिपटे बालों को देखकर सिर्फ यही नहीं, मैं तो यह भी जानता हूं कि कल मार्केट में आपने मुझे देखा था और पहचान लिया था।
हां! लेकिन...।
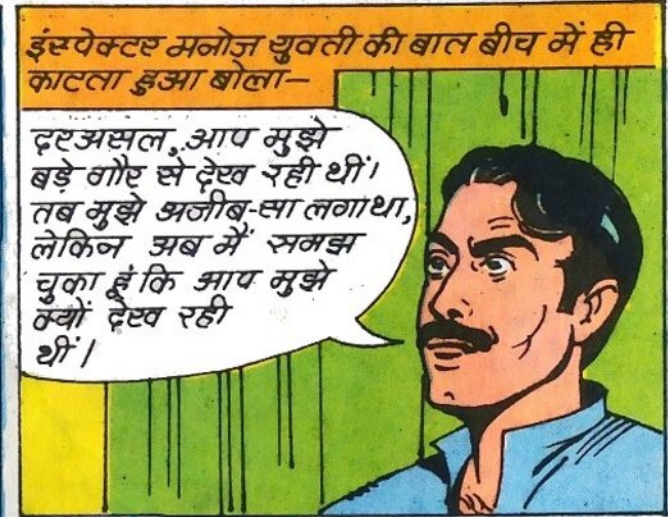
इंस्पेक्टर मनोज युवती की बात बीच में ही काटता हुआ बोला—
दरअसल, आप मुझे बड़े गौर से देख रही थीं। तब मुझे अजीब-सा लगा था, लेकिन अब मैं समझ चुका हूं कि आप मुझे क्यों देख रही थीं।
असल में मैं उस समय इस दुविधा में थी कि आपसे बात करूं या न करूं।

हवलदार बोल उठा—

वाह सर! फिर तो आप यह भी जानते होंगे कि मंजू जी को आपका पता कैसे मालूम हुआ?

यह तो बड़ी साधारण-सी बात है हवलदार। अगर दिमाग पर जोर डालो तो तुम भी जान जाओगे।

अजी साहब! मेरे पास इतना दिमाग कहां कि आपकी तरह बैठे बिठाये सारी बातें जान लूं... आप ही बता दें तो अच्छा होगा।

सुनो हवलदार, जब हमने दुकानदार को सामान इस होटल में पहुंचाने का आदेश दिया तो मंजू जी जान गईं कि हम इन्हें कहां मिल सकते हैं।

बिलकुल ठीक इंस्पेक्टर साहब! होटल का नाम सुनने के बाद ही मैंने आपसे यहां मिलने का निश्चय किया था।

हां, तो अब आप बताइये, आप मुझसे क्यों मिलना चाहती थीं?

इंस्पेक्टर साहब, मुझे आपकी मदद की जरूरत है। मेरी जान खतरे में है।

ओह...!

आपको किससे जान का खतरा है और क्यों है?

मंजू जी, अगर आप मेरी मदद चाहती हैं तो साफ-साफ बताइये कि चक्कर क्या है?

मैं उसे नहीं जानती कि वह मेरी जान क्यों लेना चाहता है। उसकी मुझसे क्या दुश्मनी है।

देखिये देवी जी। सब कुछ जाने बिना साहब आपकी कोई मदद नहीं कर सकते।

तब मंजू ने विस्तार से बताना शुरू किया।

मेरा नाम तो आप जान ही चुके हैं। मेरी एक छोटी बहन भी है। उसका नाम ऊषा है। वह मुझसे एक साल छोटी है। हम दोनों बहनें पहाड़ी के उस पार ताराखाद में अपने नाना राना रनबीरसिंह जी की पुश्तैनी हवेली में डैडी प्रभुदयाल के साथ रहते हैं। जब मैं दस साल की थी, तभी मम्मी का देहान्त हो गया था। हम होस्टल में रहते थे। डैडी हमारा खर्चा भेजते रहते थे। पढ़ाई पूरी होने के बाद पिछले साल डैडी हमें यहां ले आए, क्योंकि नानाजी का भी स्वर्गवास हो चुका था और उनकी सम्पत्ति की देखभाल की जिम्मेदारी डैडी पर ही आ पड़ी थी।

अर्थात् तुम्हारी मम्मी अपने पिता की इकलौती संतान थीं।

जी हां! लेकिन दुर्भाग्य से हम दोनों बहनें नानाजी के जीते जी उनसे नहीं मिल सकीं।

वो क्यों?

???

क्योंकि मम्मी ने डैडी से प्रेम विवाह किया था। नानाजी इस शादी से इतने नाराज हुए कि उन्होंने डैडी से मिलना तो दूर, मम्मी को अपने घर में कभी कदम न रखने का हुक्म दे डाला था। मम्मी भी जिद की पक्की थीं। जीते जी नानाजी से मिलने कभी नहीं आईं।

ओह...

... तो फिर तुम्हारे डैडी उनके सम्पर्क में कैसे आये?
डैडी कहते हैं, मरने से पहले नानाजी ने खत लिख कर उन्हें बुलाया था।
हुम्म! यहां तक तो बात समझ में आ गई। लेकिन यह समझ में नहीं आया कि अचानक तुम्हें यह क्यों महसूस होने लगा कि कोई तुम्हारी जान लेना चाहता है।
वही बताने जा रही हूं इंस्पेक्टर साहब...
... मैं विजय से प्यार करती हूं। वह मेरे साथ कालेज में पढ़ता था। हम दोनों शादी करना चाहते हैं। डैडी ने भी अपनी इजाजत दे दी है। अगले सप्ताह हमारी शादी होने वाली है, लेकिन जबसे हमारी शादी की तारीख तय हुई है, तभी से मुझे एक अज्ञात आदमी धमकी पर धमकी दे रहा है...
वह कहता है कि मैं विजय से शादी न करूं। अगर मैंने उसकी बात नहीं मानी तो वह मुझे खत्म कर देगा।
... वह मुझे दो पत्र भी लिख चुका है और कई बार फोन भी कर चुका है।
आखिर वह चाहता क्या है?
fenzz

आखिर किसी अज्ञात आदमी को तुम्हारी शादी से क्या एतराज हो सकता है।
यही तो मेरी समझ में भी नहीं आ रहा है।
हो सकता है आपका कोई और चाहने वाला भी हो।
हो सकता है। पर मैं अपने किसी ऐसे चाहने वाले को नहीं जानती।
लेकिन तुम्हारे डैडी को तो इन धमकियों की जानकारी होगी।
हां!
तो फिर उन्होंने पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं की?
डैडी इस मामले को तूल नहीं देना चाहते। उन्हें डर है कि बात जाहिर होने से मैं बदनाम हो जाऊंगी और तब शायद विजय भी मुझसे शादी करने से इंकार कर दे
क्या वे धमकी भरे खत तुम अपने साथ लाई हो?
जी हां!
कहते हुए मंजू ने अपने पर्स से दो पत्र निकालकर
...इंस्पेक्टर मनोज की ओर बढ़ा दिये।
यह लीजिए!

पत्र लेकर इंस्पेक्टर मनोज ने तुरन्त पत्र का मजमून पढ़ डाला और बोला—
अगर तुम्हें एतराज न हो तो ये पत्र मैं अपने पास रख लूं!
जी, मुझे क्यों एतराज होगा।
ठीक है, अब तुम जाओ और पूरी तरह निश्चिन्त होकर विजय से शादी करो। मैं देखता हूं वह बदमाश तुम्हारा क्या बिगाड़ता है।
थैंक्यू...
...अब मैं आपसे शादी के बाद ही मिलूंगी।
क्यों? क्या आप हमें अपनी शादी पर नहीं बुलायेंगी।
सॉरी! मैं ऐसा नहीं कर सकती। अगर डैडी को पता चल गया कि मैं आप लोगों से मिली हूं और सबकुछ बता चुकी हूं तो वे बहुत नाराज होंगे। इसलिए मैं शर्मिन्दा हूं कि चाहते हुए भी मैं...!
मैं समझ रहा हूं मिस मंजू। आपको शर्मिन्दा होने की कोई जरूरत नहीं है।
शुक्रिया इंस्पेक्टर साहब। अब मैं चलती हूं।
हां जाओ।
पर वादा करो शादी के बाद हमसे आशीर्वाद लेने यहां जरूर आओगी।

अवश्य!

तत्पश्चात् मंजू चली गई।

मंजू के जाने के बाद हवलदार बोला —

सर! मेरा ख्याल है कोई बदमाश मंजू के साथ मजाक कर रहा है। भला कोई उसकी जान क्यों लेना चाहेगा।

हो सकता है तुम्हारा ख्याल दुरुस्त हो। पर जब तक मंजू की शादी नहीं हो जाती, हम इस मामले को मजाक समझकर शांत नहीं बैठे रह सकते।

लेकिन आप उस धमकी देने वाले को ढूंढेंगे कैसे?

यही तो समझ में नहीं आ रहा है कि शुरुआत कहां से की जाये।

तभी एक विचार बिजली की तरह इंस्पेक्टर मनोज के मस्तिष्क में कौंध गया।
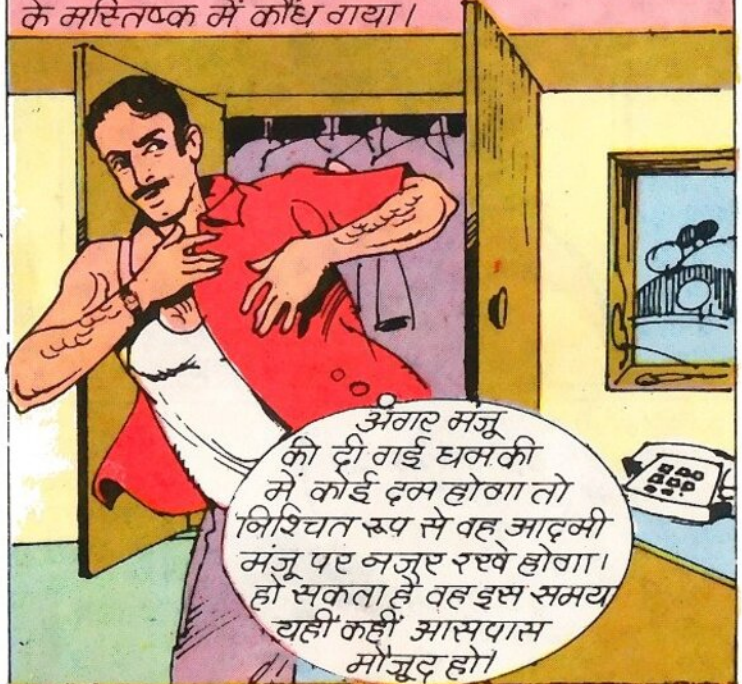
अगर मंजू को दी गई धमकी में कोई दम होगा तो निशिचत रूप से वह आदमी मंजू पर नजर रखे होगा। हो सकता है वह इस समय यहीं कहीं आसपास मौजूद हो।

इस विचार के दिमाग में आते ही इंस्पेक्टर मनोज खुली हुई खिड़की की तरफ लपका। इत्तफाक से वह खिड़की होटल के सामने वाले भाग की तरफ ही खुलती थी।

कुछ ही क्षणों बाद वह बाहर झांक रहा था।

इंस्पेक्टर मनोज की तेज निगाहें उस आदमी की तलाश में भटक रही थीं, जिसे मंजू में दिलचस्पी हो। परन्तु उसे कोई व्यक्ति कार के आस-पास नजर नहीं आया।

लेकिन कार जैसे ही आगे बढ़ी,इंस्पेक्टर मनोज बुरी तरह चौंका।

पलक झपकते ही वह सबकुछ भांप गया।

दूसरे ही पल वह हवलदार की तरफ पलटता हुआ बोला—

इंस्पेक्टर मनोज और हवलदार वीर बहादुर लगभग दौड़ते हुए नीचे पहुंच गये। फिर होटल की इमारत के बाहर निकलते ही इंस्पेक्टर मनोज दूर जाते बूढ़े की तरफ इशारा करते हुए बोला—

कहने के साथ ही हवलदार उस दिशा में दौड़ पड़ा, जिधर वह बूढ़ा जा रहा था।

तब इंस्पेक्टर मनोज भी न रुका। कुछ ही देर बाद वह मोटरसाइकिल पर सवार होकर कार वाली दिशा में चल पड़ा। जल्द ही वह कार इंस्पेक्टर को नजर आने लगी, जिसमें मंजू जा रही थी।

अगले ही पल इंस्पेक्टर मनोज ने मोटरसाइकिल की रफ्तार बढ़ा दी, लेकिन जैसे ही उसनें अगला मोड़ पार किया, वह दहल उठा।
ओ माई गॉड!
उधर हवलदार वीर बहादुर को अपने पीछे आते देख उस अज्ञात बूढ़े के कदमों में बला की तेजी आ गई थी। इससे पहले कि हवलदार उसके करीब पहुंचता, वह चमेली की बेल की बाढ़ में घुसकर नजरों से ओझल हो गया। जब हवलदार उस बाढ़ को पार कर पक्के पैसेज में पहुंचा तो वहां कोई नहीं था।
अरे, यहां तो कोई नहीं है! वह बुड्ढा कहां गायब हो गया?
तभी एक अधेड़ दम्पति को विपरीत दिशा से अपनी ओर आते देख वह उनकी ओर लपका और निकट पहुंच कर बोला—
जनाब, आपने उस तरफ किसी बूढ़े मैकेनिक को जाते तो नहीं देखा।
हां! देखा तो था, लेकिन...!
अधेड़ व्यक्ति की पूरी बात सुनने से पहले ही हवलदार आगे बढ़ गया।

लेकिन मेरी समझ में कुछ-कुछ आने लगा है। आओ, अब यहां से चलें।
तो क्या आप हवेली में चलकर उस आदमी से पूछताछ नहीं करेंगे।
नहीं! अभी इसकी जरूरत नहीं है। चलो बैठो।
लेकिन आप जा कहां रहे हैं?
होटल ब्लू हैवन पहुंचकर इंस्पेक्टर मनोज ने मोटरसाईकिल पार्किंग में खड़ी की और बोला—
होटल ब्लू हैवन।
इंस्पेक्टर मनोज का जवाब इतना सपाट और संक्षिप्त था कि हवलदार की आगे कुछ पूछने की हिम्मत ही नहीं हुई। वह चुपचाप इंस्पेक्टर मनोज के पीछे बैठ गया।
अब तुम मुझे उस जगह ले चलो, जहां वह बूढ़ा मैकेनिक तुम्हारी नजरों से ओझल हुआ था।
चलिए।
फिर हवलदार, इंस्पेक्टर मनोज को चमेली की बेल की उस बाड़ के पास ले गया, जहां बूढ़ा मैकेनिक उसकी नजरों से ओझल हो गया था। इंस्पेक्टर मनोज बाड़ में दाखिल हो गया। थोड़ी ही देर बाद जब वह बाहर आया तो उसके हाथ में मैकेनिक की पोशाक और सफेद दाढ़ी-मूंछ और बाल देख हवलदार चुप न रह सका।
सर! यह तो उसी बूढ़े मैकेनिक की पोशाक है।
और, यह दाढ़ी-मूंछ और बाल भी उसी के हैं...

...वह मेक अप में था। भागते हुए वह अपनी पहचान यहीं छोड़ गया, इसीलिए तुम उसे पहचान न सके।
इसका मतलब यह हुआ कि मंजू का पिता ही मंजू का हत्यारा है, और इस जुर्म में एक औरत भी शामिल है।
हां!
लेकिन एक बाप अपनी बेटी की हत्या क्यों करेगा...
...और उसके साथ वह औरत कौन थी।
यही तो पता लगाना है हवलदार।
मंजू के पिता को गिरफ्तार करवा दीजिए। सारी हकीकत का पता चल जायेगा।
नहीं हवलदार, मंजू के पिता को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता। क्योंकि यह साबित करना मुश्किल होगा कि ये कपड़े और नकली दाढ़ी-मूंछ उसी के हैं...
...उसे रंगे हाथों गिरफ्तार करवाना होगा।
वो कैसे?
मेरे दिमाग में एक योजना आई है। सुनो...।
फिर इंस्पेक्टर मनोज हवलदार को अपनी योजना समझाने लगा।
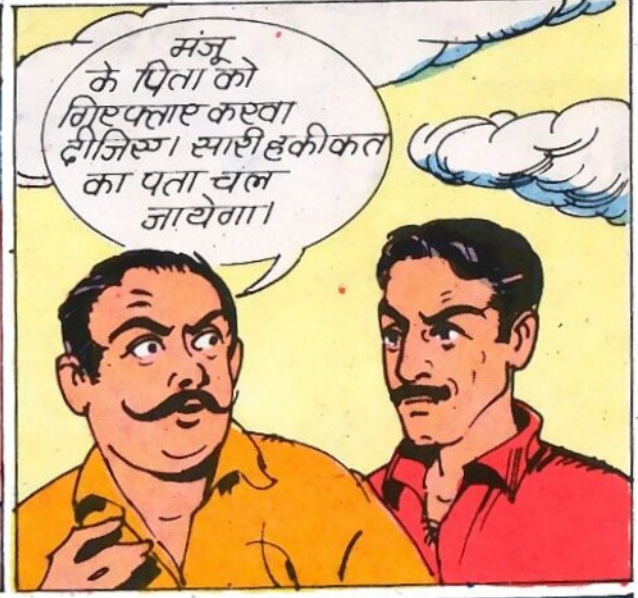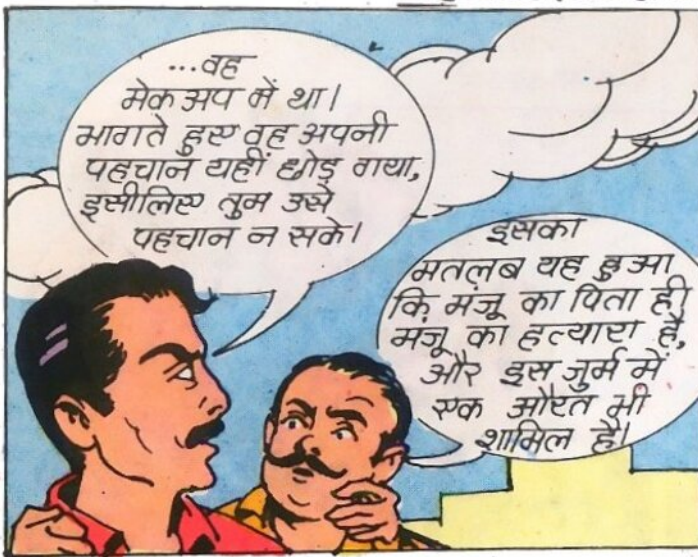
इंस्पेक्टर मनोज की योजनानुसार शाम सात बजे हवलदार ने मंजू के पिता का नम्बर डायल किया और सम्बन्ध स्थापित होने पर बोला—
मिस्टर प्रभुदयाल! मैं जानता हूं कि मंजू के हत्यारे तुम हो। मंजू की कार के ब्रेक तुमने फेल किये थे।
क्या बकते हो? कौन हो तुम?—
तुम्हारे जुर्म के निशान मेरे पास सुरक्षित हैं मिस्टर दयाल। अगर मैंने मैकेनिक के कपड़े और नकली दाढ़ी-मूंछ इंस्पेक्टर मनोज के पास पहुंचा दिये तो तुम्हारा बचना नामुमकिन है।
आखिर तुम चाहते क्या हो?
मेरा मुंह बन्द करने की कीमत सिर्फ दस हजार है मिस्टर दयाल।
मुझे मंजूर है।
तो फिर दस हजार के नोट लेकर ठीक दस बजे मेन बाजार चौक पर पहुंच जाओ। मैं वहीं मिलूंगा।
लेकिन मैं तुम्हें पहचानूंगा कैसे?
मेरे सिर पर काली टोपी और हाथ में लाल रूमाल होगा।
इतना कहने के साथ ही हवलदार ने सम्बन्ध विच्छेद कर दिया...

... और पलटकर बोला—
सर! आपकी योजना कामयाब रही। वह पहुंच रहा है।
मैं सुन चुका हूं अब मेरी आगे की योजना ध्यान से सुनो...

...कुछ ही देर में इंस्पेक्टर खान का आदमी विनायक निर्देशित पोशाक में यहां पहुंचने वाला है। तुम उसे सारी बात समझाकर मेन बाजार चौक से पहले छोड़ देना, लेकिन उस पर नजर बराबर रखना। जैसे ही दयाल उसे नोट थमाये, तुम उसे दबोच लेना।
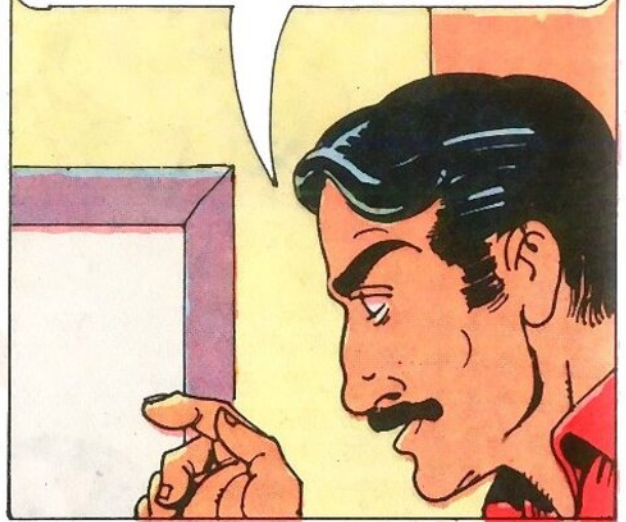
मैं समझ गया सर! पर क्या आप हमारे साथ नहीं चल रहे हैं?
नहीं, दरअसल मैं मंजू की बहन उषा से अकेले में मिलना चाहता हूं। और यह दयाल की ना-मौजूदगी में ही सम्भव है... इसलिए मैं तारागढ़ जा रहा हूं। दयाल के हवेली से निकलने के बाद मैं उषा से मिलूंगा। वहां की कार्य-वाही निपटाकर मैं थाने में पहुंचजाऊंगा।

इसका मतलब यह हुआ कि अब आपसे थाने में ही मुलाकात होगी।
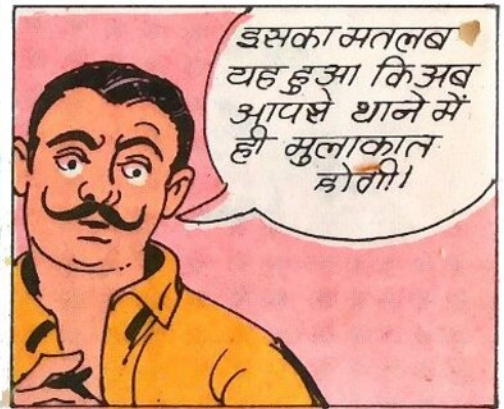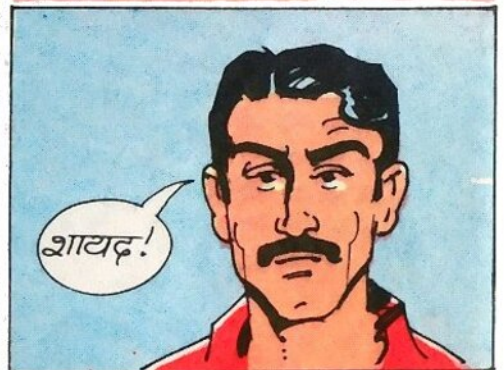
शायद!
इतना कहकर इंस्पेक्टर मनोज कमरे से निकल गया।

लगभग पैंतालीस मिनट बाद इंस्पेक्टर मनोज तारागढ़ में ठाकुर एनबीएसिंह की हवेली से कुछ दूरी पर मौजूद रेस्टोरेंट में बैठा चाय की चुस्कियां ले रहा था।

दयाल इसी रोड से गुजरेगा। उसके निकलने के बाद ही मैं हवेली की ओर जाऊंगा।

लगभग दस मिनट बाद प्रभुदयाल की कार को सड़क से गुजरते देख मनोज चौंका।

अरे! यह तो दयाल की कार है...

...यह तो मेरी आशा के विपरीत बहुत जल्दी यहां से चल पड़ा है...

हवेली में पहुंचकर उसने मोटर साइकिल खड़ी की और मास्टर-की की मदद से ताला खोल हवेली में दाखिल हो गया। जब वह भीतरी भाग में पहुंचा तो अचानक एक सुरीला स्वर उसके कानों से टकराया।

इंस्पेक्टर चौंककर पलट पड़ा। सामने एक निहायत खूबसूरत युवती को देख वह तुरन्त भांप गया कि वह उषा ही है।

अगर मेरा अंदाजा गलत नहीं है तो आप मिस उषा ही हैं।

जी हां! मैं उषा हूं। लेकिन आप कौन हैं। अन्दर कैसे आये?

मैं इंस्पेक्टर मनोज हूं।

ओह! आप...

...आज सुबह मंजू दीदी आप ही से मिलने गई थीं, लेकिन अभी तक लौटकर नहीं आईं।

आपकी दीदी अब कभी लौटकर नहीं आयेंगी।

क्यों?

क्या आपके डैडी ने आपको नहीं बताया कि मंजू की कार दुर्घटना में मृत्यु हो चुकी है।
नहीं! यह झूठ है। आप झूठ बोल रहे हैं। दीदी जिंदा है। डैडी उन्हें ढूंढने गये हैं।
तो फिर आपके डैडी ने झूठ कहा है मिस उषा...
मंजू अब इस दुनिया में नहीं है।
नहीं... ई...!
और वह गश खाकर गिर पड़ी
थोड़ी देर बाद जब उसे होश आया तो वह फफककर रो पड़ी। इंस्पेक्टर मनोज उसे सांत्वना देते हुए बोला—
धैर्य से काम लीजिए मिस उषा। अगर मंजू की मौत सहज एक हादसा होती तो मैं आप पर सच्चाई कभी जाहिर नहीं करता। दरअसल मंजू की हत्या की गई है और हत्यारे को पकड़ने के लिए मुझे आपकी मदद की जरूरत है।
ओह! इसका मतलब दीदी ठीक कहती थी, पर मैंने उनकी बात पर कभी विश्वास नहीं किया।

क्या कहती थीं आपकी दीदी?
दीदी कहती थी, उसे कोई मार देना चाहता है। रात को उसे अपने कमरे में अजीब-सी सीटी की आवाज सुनाई देती है। लेकिन मुझे कभी कोई आवाज सुनाई नहीं दी।
क्या आप दोनों बहनें अलग-अलग कमरों में सोती थीं?
जी हां! पर हम दोनों के कमरे अगल-बगल में हैं।
क्या मैं मिस मंजू का कमरा देख सकता हूं।
अवश्य।
तत्पश्चात् उषा मनोज को मंजू के कमरे में ले गई। इंसपेक्टर ने मंजू के कमरे का बड़े ध्यान से निरीक्षण किया, लेकिन उसे वहां कोई भी संदिग्ध बात नजर नहीं आ रही थी। परन्तु मंजू द्वारा सीटी सुनाई देने की बात उसके दिमाग में घूम रही थी। अचानक उसकी नजरें मंजू के बेड के निकट दीवार में लाइट के खुले हुए बॉक्स पर जा टिकीं।
इस बॉक्स में न तो वायरिंग है और न स्विच की शीट लगाई गई है। फिर इस बॉक्स को यहां लगाने की क्या जरूरत थी।
मनोज सोच में पड़ गया।

मनोज कुछ देर सोचता रहा, फिर अचानक उसकी आंखें चमक उठीं। उसने एकाएक ही ऊषा से पूछा—
इस दीवार के दूसरी तरफ क्या है?
दूसरी तरफ डैडी का कमरा है।
तब इंस्पेक्टर मनोज के कहने पर ऊषा उसे अपने पिता के कमरे के सामने ले गई। कमरे का दरवाजा लॉक्ड था, लेकिन इंस्पेक्टर मनोज को लॉक खोलने में कोई परेशानी नहीं हुई। जल्द ही वह उस कमरे में था। कमरे में घुसते ही उसकी नजर दीवार पर जा टिकी।
ओह! मेरा शक ठीक निकला। इस कमरे में भी वैसा ही बॉक्स है, जैसा मंजू के कमरे में था।
इस बॉक्स के पाइप का लिंक जरूर दूसरे बॉक्स से है। शायद इसी माध्यम से प्रभुदयाल सीटी की आवाजें निकालता था। लेकिन क्यों...?
सोचते-सोचते इंस्पेक्टर मनोज का दिमाग क्यों पर आकर अटक गया।
इस क्यों का जवाब ढूंढने की कोशिश में उसकी आंखें कमरे की वस्तुओं पर थिरकने लगीं। अचानक वह चौंका।
यह दूध की कटोरी तिजोरी के ऊपर क्यों रखी है। दयाल यह दूध किसे पिलाता होगा?
तभी तिजोरी के अन्दर से 'फुकार' की आवाज सुन इंस्पेक्टर मनोज की आंखें चमक उठीं।
फुस्स... फुस्स!
ओह। सांप!
अब समझा। मंजू को सीटी की आवाजें क्यों सुनाई देती थीं...

दूसरे ही पल उसने सावधानी से तिजोरी खोल दी। तिजोरी खुलते ही अन्दर बैठे काले नाग ने जैसे ही फन बाहर निकाला, इंस्पेक्टर मनोज की दसों अंगुलियों ने उसे फन से दबोचकर बाहर खींच लिया।
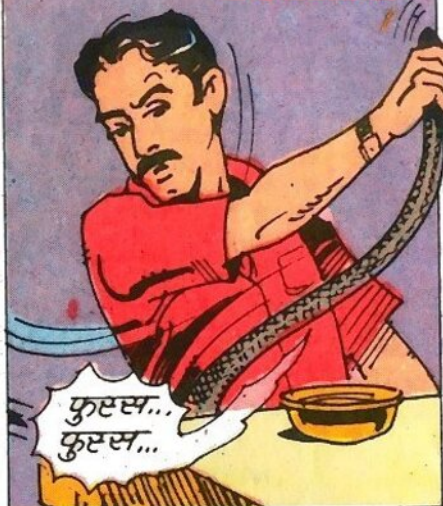
फिर इंस्पेक्टर मनोज ने खिड़की खोलकर सांप को बाहर फेंक दिया। जब वह वापस तिजोरी के निकट पहुंचा तो उषा भयभीत स्वर में बोली—

...इंस्पेक्टर मनोज तिजोरी में रखे कागजातों को टटोलने में व्यस्त हो गया। जल्दी ही उसके हाथ एक डायरी लग गई। डायरी पढ़ते ही उसको अपने दिमाग में मंडरा रहे सभी सवालों का जवाब मिलता चला गया।

फिर इंस्पेक्टर मनोज उषा से मुखातिब हो गम्भीर स्वर में बोला—

इतना कहकर इंस्पेक्टर मनोज उषा को आश्चर्य के सागर में गोते लगाता छोड़ वहां से चल दिया।

उधर विनायक नाम का पुलिस का आदमी जैसे ही मेन बाजार चौक पर पहुंचा, रिवाल्वर की ठण्डी नाल उसकी पसली से आ सटी।
मिस्टर, अपनी खैरियत चाहते हो तो चुपचाप चलते रहो।
ओह!
हवलदार की पैनी आंखों से यह बात छुपी न रही थी।
ओह! तो प्रभुदयाल ने अपनी जगह उस औरत को यहां भेजा है। बड़ा मक्कार निकला साला। खैर, बकरी की अम्मा कब तक खैर मनायेगी। पकड़ में आते ही यह औरत उसका सारा भेद उगल देगी।
यह सोच हवलदार तेजी से आगे बढ़ा...

...और औरत के निकट पहुंच बला की फुर्ती का प्रदर्शन करते हुए रिवाल्वर उसके हाथ से झपटते हुए गुर्राया–
अब तुम पुलिस की हिरासत में हो बेवकूफ औरत। चालाकी दिखाने की कोशिश मत करना।
ओह!
तभी कुछ दूरी पर हवलदार को ... का चेहरा नजर आया। वह चौंका। दयाल के हाथ में ... था।

वह शायद उस औरत को निशाना बनाना चाहता था। पर हवलदार कच्चा खिलाड़ी नहीं था। उसने तुरन्त प्रभुदयाल के रिवाल्वर वाले हाथ को अपनी गोली का निशाना बना दिया।

खतरा भापते ही प्रभुदयाल भाग खड़ा हुआ। हवलदार औरत को विनायक की सुपुर्दगी में छोड़ उसके पीछे भागता हुआ चीखा।

लेकिन प्रभुदयाल पर हवलदार की धमकी का कोई असर नहीं हुआ।

लेकिन जब वह दौड़ता हुआ भीड़ भरे चौराहे को पार कर अपनी कार के निकट पहुंचा तो उसके पैरों तले धरती खिसक गई।

प्रभुदयाल ने तुरन्त आत्म-समर्पण कर दिया।

थोड़ी देर बाद ही हवलदार भी वहां पहुंच गया। उसके पीछे-पीछे विनायक भी उस औरत को लेकर आ गया। इंस्पेक्टर खान, प्रभुदयाल और उस औरत को हिरासत में लेने के बाद अपने दल सहित जीप में बैठकर थाने चला गया। तब इंस्पेक्टर मनोज हवलदार के साथ अपनी मोटरसाइकिल पर बैठ होटल की ओर चल दिया।

दरअसल मंजू की मां ने प्रभुदयाल से प्रेम विवाह किया था। विवाह के बाद अपने पिता की नाराजगी के कारण मंजू की मां प्रभुदयाल के साथ रामनगर चली गई। रमेश प्रभुदयाल का दोस्त था। प्रभुदयाल अपनी पत्नी के साथ उसके घर में रहने लगा। मंजू के जन्म के बाद मंजू की मां ने अपने पिता को दो-तीन खत लिखे, परन्तु उसके पिता ने जब कोई उत्तर नहीं दिया तो मंजू की मां ने अपने पिता को खत लिखने बन्द कर दिये। तत्पश्चात जब उषा गर्भ में थी, मंजू के पिता की मृत्यु हो गई और उषा के जन्म के बाद मंजू की मां का भी देहान्त हो गया। मरते वक्त मंजू की मां अपनी दोनों नन्ही बच्चियों को रमेश को सौंप गई। रमेश के कोई औलाद नहीं थी। अतः रमेश और उसकी पत्नी ने दोनों बच्चियों को अपनी औलाद की तरह ही पाला। मंजू और उषा ने जब होश संभाला तो उन्होंने रमेश और माया को ही अपने माता पिता के रूप में पाया। रमेश ने दोनों लड़कियों को होस्टल में भर्ती करवा दिया। उसी दौरान मंजू के नाना का खत आया, जिसमें उन्होंने अपनी बीमारी का जिक्र किया था। तभी रमेश के दिमाग में एक खतरनाक षड्यंत्र ने जन्म लिया। उसका दिमाग रनबीरसिंह की अपार दौलत को हड़पने की योजना तैयार करने लगा। इसका पहला चरण तब शुरू हुआ, जब मंजू और उषा की नजरों में उसने अपनी पत्नी को जीते जी मार डाला। वह अपनी पत्नी को मंजू की मां का स्थान तो रनबीरसिंह की हवेली में दिलवा नहीं सकता था। पर वह जानता था, रनबीर सिंह ने प्रभुदयाल को नहीं देखा है। अतः वह प्रभुदयाल के रूप में रनबीरसिंह से मिला और उन्हें मंजू की मां के मरने की खबर सुना दी। रनबीरसिंह उसे ही अपना दामाद मान बैठे, परन्तु मरने से पहले उन्होंने अपनी वसीयत में प्रभुदयाल को अपनी सम्पत्ति का वारिस बनाने की बजाय मंजू और उषा की शादी न होने तक केवल सम्पत्ति की देखभाल का अधिकार ही दिया। इस तरह मंजू और उषा की शादी के बाद रमेश उर्फ प्रभुदयाल को उनकी सम्पत्ति में से कुछ नहीं मिलने वाला था।

ओह! अब समझा। मंजू अपनी मर्जी से शादी कर रही थी। अतः उसे आधी सम्पत्ति के हाथ से निकल जाने का डर हो गया। इसीलिए उसने मंजू को रास्ते से हटा दिया।

हां! मंजू के विजय नाम के लड़के से शादी करने की इच्छा जाहिर करने के बाद से ही रमेश चौकन्ना हो गया था और उसकी हत्या का षड्यंत्र रच चुका था। उसकी पत्नी ही मंजू को धमकी भरे खत लिखती थी और मर्दानी आवाज में फोन पर धमकियां दिया करती थी। दूसरी तरफ रमेश ने एक जहरीला ट्रेंड सांप अपने कमरे में लाकर रख लिया था, जो सीटी की आवाज पर हरकत करता था। वह मंजू को सांप से कटवाकर उसकी मौत को प्राकृतिक मौत का रूप देना चाहता था, परन्तु जब उसने मंजू को मेरे पास आते देखा तो उसने अपनी योजना बदल दी।
ओह! दौलत की हवस ने रमेश को कितना अंधा कर दिया। जिसे अपनी औलाद की तरह पाला, उसी की जान ले ली। शुक्र है, उषा अभी जिंदा है।
अगर वह पकड़ा न जाता तो उसका दूसरा शिकार उषा ही होती। वह उषा को सांप से डसवा देता और सारी दौलत पर अपना अधिकार जमा लेता, लेकिन अफसोस कि किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया।
पर आपको इन सब बातों का पता कैसे चला। अभी तो रमेश ने कोई बयान भी नहीं दिया है।
ओह!
कुछ लोगों को अपनी जीवन कथा लिखने की आदत होती है। रमेश भी उनमें से एक है। उसने अपनी जीवनी डायरी में लिख छोड़ी थी, जो मेरे हाथ लग गई और मुझे उसकी हकीकत का पता चल गया।
फिर हवलदार ठण्डी आह भरता हुआ बोला—
जब उषा को इस सच्चाई का पता चलेगा तो उसके दिल पर क्या गुजरेगी।
सच्चाई का सामना करने की हिम्मत इंसान में खुद ब खुद पैदा हो जाती है।
तब हवलदार वीर बहादुर ने कुछ और कहने के लिए मुंह खोला ही था कि इंस्पेक्टर मनोज उसे टोकता हुआ बोला—
बस! अब मेरा और भेजा मत चाटना। बड़ी जोर की भूख लग रही है।
समझ गया सर! मैं अभी आपके लिए बढ़िया खाना मंगवाता हूं।
इतना कहकर हवलदार फोन की तरफ बढ़ गया।

समाप्त
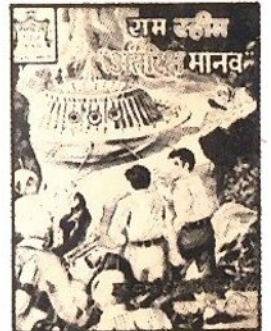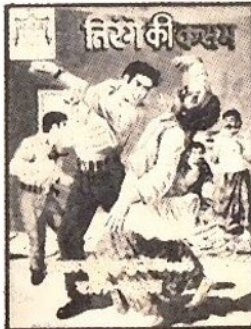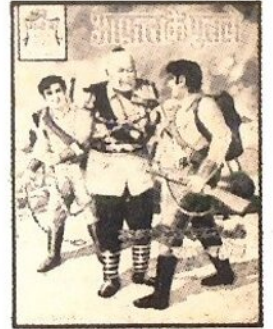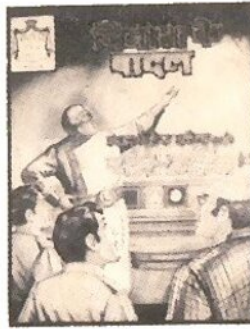
1991 का नया धमाका

मनोज कॉमिक्स में

राम-रहीम के बीस रोमांचक कॉमिक्स 120/-रुपये में खरीदें और साथ में 120/-रुपये मूल्य के आकर्षक स्टीकर **मुफ्त** प्राप्त करें
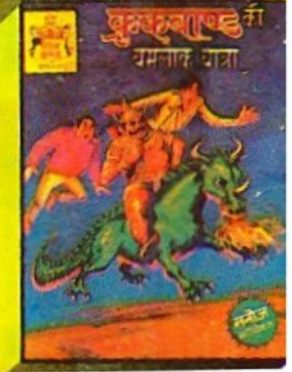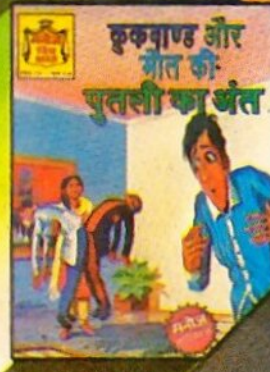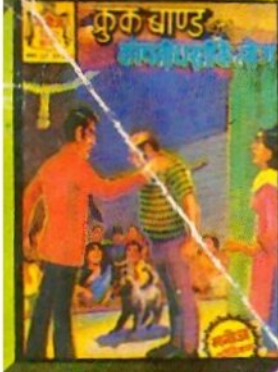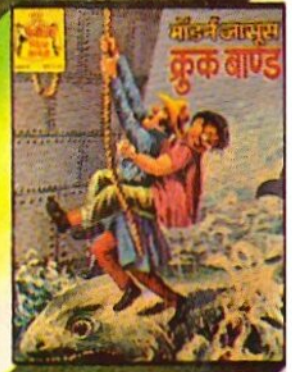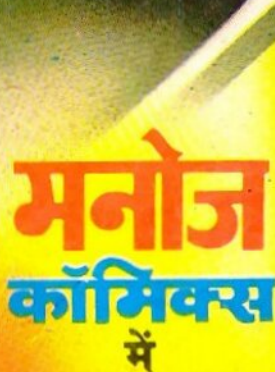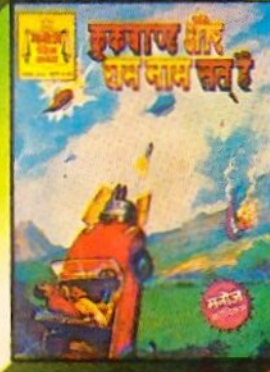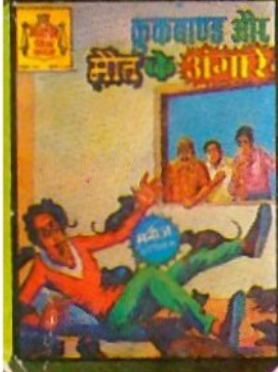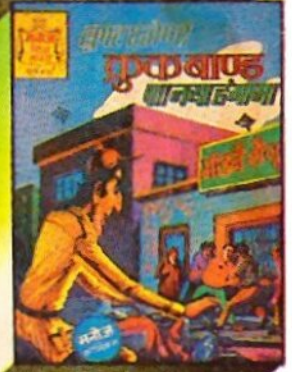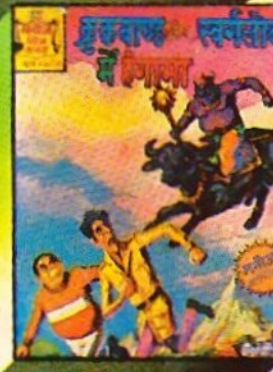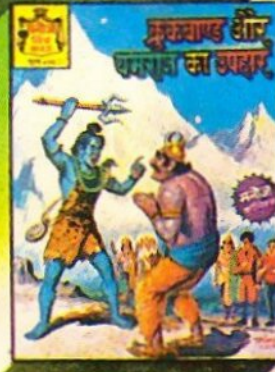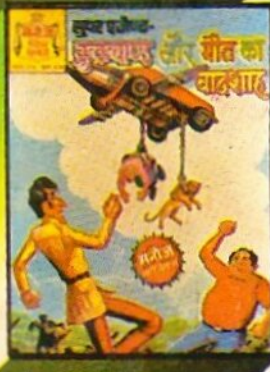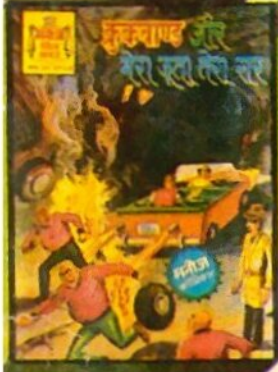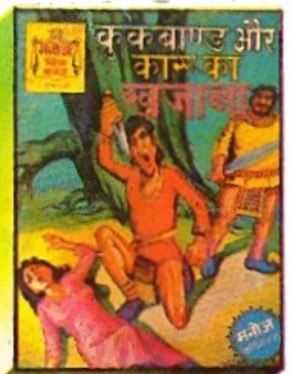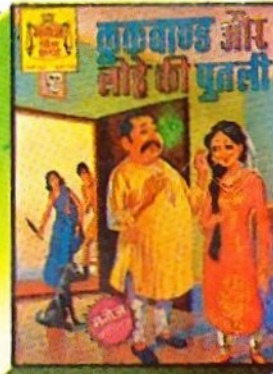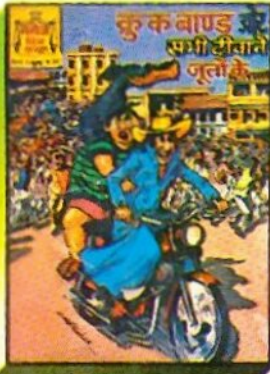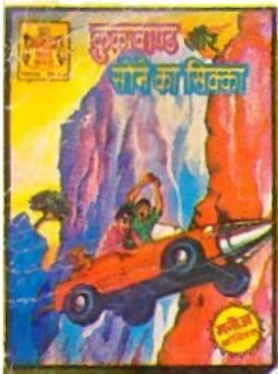
मनोज
कॉमिक्स
में
पढ़िये
मॉडर्न जासूस
कुकबान्ड
के
20 रोमांचक कॉमिक्स
आगामी आकर्षण
कुकबाण्ड और पति की तलाश